संजीव की कहानियों में नारी शोषण के प्रति प्रतिशोध

पी. एम. आर.जयंती
प्राध्यापक हिंदी
SKR&SKR GOVT COLLEGE
FOR WOMEN(A) KADAPA

बीज शब्द : संवेदना, शोषण, आक्रोश, समाज

आधुनिक हिंदी कहानी के क्षेत्र में संजीव को एक सशक्त प्रतिभा संपन्न कहानीकार के रूप में पहचाना जाता है संजीव का जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिला का गांव में हुआ है। संजीव का जन्म एक गरीब किसान परिवार में हुआ संजीव क्रांतिकारी भगत सिंह के विचारों और मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है भारतीय संस्कृति से संजीव को विशेष लगाव है साहित्य सृजन का प्रारंभ संजीव अपने स्कूली जीवन में ही किया ।पहले इन्होंने पत्रिका निर्माण किया लेकिन पद में मन ना लगने के कारण गद्य की ओर आकृष्ट हुए। संजीव पर मुंशी प्रेमचंद का सर्वप्रथम प्रभाव पड़ा इस संबंध में संजीव कहते हैं कि "मैं प्रेमचंद होना नहीं चाहता मैं प्रेमचंद को छूना चाहता हूं" एक बार संजीव प्रेमचंद के साहित्य और विचरण की ओर काफी आकर्षित हुए।

संजीव बहुत संवेदनशील व्यक्ति है उनकी यह संवेदनशीलता उनके प्रत्येक रचना में छलकती है ।उनकी रचनाओं में मजदूर,असहाय दलित, आदिवासियों के प्रति प्रेम और आस्था अन्याय, अत्याचार करने वाले उच्च वर्ग के प्रति घृणा, द्वेष और आक्रोश दिखाई देता है संजीव अपने साहित्य द्वारा दलित, मजदूर, असहाय नारियों को उच्च वर्ग के अन्यायों के प्रति विरोध में आवाज उठाने की जोर देते हैं और इनकी विवशता को वाणी देने में सदैव तत्पर रहे हैं, इन्हें किसी पर अन्याय, अत्याचार व शोषण होता हुआ देखा नहीं जाता।

साहित्य की विधाओं में कहानी को अनन्य महत्व प्राप्त हुआ है। कहानी जीवन समाज की छोटी सी घटना को प्रस्तुत करके मनोरंजन करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है ।स्त्री पात्र जितनी स्वाभिमानी, साहसी और सहनशील होती है, उतनी ही उसे परिवार और समाज से अन्याय-अत्याचार का सामना करना पडता है। नारी कभी-कभी परिवार और समाज में असुरक्षित महसूस होती है। प्रमुख स्त्री पात्रों में दुलारीबाई (घर चलो दुलारीबाई), सोमा (गुफा का आदमी), जसी बहू (जसीबहु), जोहराबाई (संतुलन), छबीली (ऊष्मा), सूरसती (घनुष टंकार), शिखा (पुन्नीमाटी), आयशा (मानपत्र) पल्लवी दी (कन्फेशन), नसीबन बी (सागर-सीमांत), कल्याणी (कठपुतली), तिरबेनी (तिरबेनी का तड़बन्ना) आदि संजीव की कहानियों की प्रमुख स्त्री पात्र हैं।

संजीव की कहानियों में नारियों के विविध रूपों का चित्रण मिलता है।संजीव की 'घर चलो दुलारी भाई' कहानी की प्रमुख पात्र एक विधवा नारी है । संजीव ने इस कहानी के माध्यम से दुलारी बाई की वेदना, शोषण और घुटन भरा जीवन तथा आज की दोष युक्त न्याय व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट किया है। कहानी का प्रारंभ कचहरी के बरामदे से शुरू होता है वह अपनी अतीत को याद करके रोती हुई बैठी है दुलारी बाई अपने मायके से और ससुराल की जायदाद की अकेली बारिश है उसकी ससुराल वाले पहले उसकी पति और बाद में उसके छोटे बेटे को मार डालते हैं तो वह अदालत में न्याय मांगने जाती है। रिश्वत देकर उसे मरी हुई साबित करते हैं ।ससुराल वालों से बचने के लिए वह घर से भाग कर प्राइमरी स्कूल मास्टर मुस्ताक़ अहमद के पास आश्रय के लिए जाती है ।सभी लोग उसे चरित्रहीन मानते हैं। इस डर से वह मुस्ताक़ का घर छोड़ देती है।वह गांव की अलग हिस्से में छुपकर अपने परिवार वालों के विरुद्ध मुक़दमा दायर करती है, लेकिन घर वाले आपस में जायदाद बांट लेते हैं ।वह मुस्ताक अहमद को अदालत में जज के रूप में देखती है और फिर से दोषी साबित की जाती है ।अदालत के बाहर ससुराल वाले अपने आप को विजय घोषित करते हैं।

प्रस्तुत कहानी से यह स्पष्ट होता है कि पैसे लोगों के बीच रिश्तों को खत्म कर देती हैं। पैसों की लिप्सा व्यक्ति को अपने ही परिवार के व्यक्ति को पहचानने से साफ इनकार कर देते हैं इससे दुलारी भाई बहुत ही शारीरिक मानसिक उत्पीड़न से गुजरती है।

पिशाच कहानी में लेखक ने निम्न वर्ग के लोगों पर अन्याय, अत्याचार करने वाले तथा स्त्रियों पर लैंगिक शोषण करने वाले घमंडी स्वार्थी लोगों का चित्रण किया है।

वापसी कहानी में लेखक ने देश की रक्षा करने वाले फौजियों के घृणित व्यवहार पर व्यंग्य किया है । साथी एक सच्चे पराक्रमी फौजी के चरित्र को चित्रित किया है। वापसी कहानी का प्रमुख पात्र टोनी एक ईमानदार और कर्मनिष्ठ फौजी है । टोनी को अकेले जलाशय की रक्षा करने की एमरजेंसी ड्यूटी सौंपा जाता है ।एक रात टोनी को एक असहाय नारी दिखाई देती है । उसको टोनी ने कमांडिंग ऑफिसर को सौंप कर फिर से ड्यूटी पर चला जाता है । बाद में उसे औरत के साथ सभी फौजी बलात्कार करते हैं ।यह सुनकर टोनी को अपने आप पर और अन्य फौजियों पर घृणा और गुस्सा आता है।

दूसरी बार जब अफसर और फौजी लुटे हुए गहनों को बांटते समय दूर पर खड़ी हुई अकेली औरत को देखकर उस पर टूट पड़ते हैं ।इस दृश्य को देखकर टोनी आवेश में सभी फौजियों को अपनी बंदक से मार देता है और उसे नारी की रक्षा करता है । उसे अपनी मां की याद आती है और वह भी इसी प्रकार अपनी आबरू खो गई होगी, इसी कारण बार-बार पिता के बारे में पूछने से भी मौन धारण करती है। टोनी को अपनी मां से बहुत प्यार और उसकी बेबसी पर पछतावा आता है। प्रसिद्ध कहानी में संजीव ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि देश के फौजियों को देश तथा देशवासियों की सेवा और रक्षा करने की जिम्मेदारी दी जाती है। परंतु जब वे औरतों की रक्षा न करके उन पर लैंगिक शोषण करते हैं तो देश की रक्षा क्या खाक करेंगे?

बाढ़ कहानी में संजीव ने प्रमुख पात्र त्रिवेणी की लैंगिक विकृति से पीड़ित मानसिक कथा को स्पष्ट किया है इस कहानी में आपसी रिश्ते नाते छठ पर टिके हुए हैं । वर्तमान सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक समस्या का चित्रण इसमें मिलता है।

संजीव ने कई कहानियाँ नारी चेतना को आधार बनाकर लिखी हैं। इनकी नारियाँ नारी विमर्श और नारी आंदोलनों से दूर होते हुए भी अपनी अस्मिता के प्रति सजग हैं। लेखक स्त्री-पुरुष समानता के पक्षधर हैं। बावजूद इसके नौकरीपेशा, आत्मनिर्भर तथा आधुनिका नारी इनकी कहानियों में नकारात्मक चरित्र के रूप में प्रस्तुत की गई हैं तथा लेखक की निंदा एवं आलोचना की पात्र हैं। स्त्री वर्ग के प्रबल पक्षधर माने जाने वाले संजीव नारी मुक्ति आंदोलनों से विशेष रूप से खफा हैं। 'कठपुतली' कहानी की कल्याणी दी सेठ की रखैल है जिसे उसके गरीब माँ-बाप चंद पैसों की खातिर सेठ को बेच चुके हैं। कल्याणी दी

कुछ समय पश्चात् जब अपने परिवार वालों से मिलने जाती है तो उसे लगता है कि घर के सारे लोग मर चुके हैं, "जानते हो राजू, बाबा और माँ ने मुझे अलग थाली में खाना दिया। छोटा भाई बबलू जो मुझसे हमेशा लड़ता-झगड़ता रहता था, पास तक नहीं फटका इस बार।...उन्होंने मुझे बाहर तक निकलने नहीं दिया और अँधेरे में मुझे सेठ के आदमी के हवाले कर दिया... अच्छा हुआ, एक वहम था, टूट गया।"1 संजीव ने यहाँ रीतते, बुझते सम्बन्धों तथा उससे उत्पन्न तीव्र पीड़ा का अहसास कराया है।

मानवीय रिश्तों की पड़ताल करने वाली कहानी 'माँ' में माँ के जीवन के अनछुए एवं मार्मिक पक्षों का उद्घाटन किया गया है। माँ जो आजीवन अपनी संतान को देती है, बदले में उससे कुछ आशा नहीं करती। लेकिन वही संतान उसको कितना समझ पाती है, उसके दुख-दर्द को कितना बाँट पाती है, यही सब बताने का प्रयास लेखक ने इस मार्मिक कहानी में किया है। बच्चों से पहेलियाँ बूझने वाली माँ स्वयं एक पहेली बन जाती है, उसके खुद के बच्चे उसे समझ और पहचान नहीं पाते हैं, "तमाम अफवाहों के बावजूद माँ से सुमेर के अवैध सम्बन्धों पर संदेह की गुंजाइश हमारे मनों में अभी भी बनी हुई थी।"[2] यह वही माँ थी जो बचपन के दिनों में बच्चों को सबसे प्यारी और सुंदर लगती थी।

'फैसला' कहानी की दोनों प्रमुख स्त्री पात्र मुसन्नी और मेहरुन्निसा अपने-अपने शौहर से प्रेम करती है किन्तु शौहर द्वारा तलाक दे देने का भय उन्हें सताता है। मुसन्नी के केस के कारण जज मेहरुन्निसा अपने आपको हर तरफ से असुरक्षित महसूस करती है। "सुनो अगर हमने तलाक के खिलाफ कोई फैसला दिया तो क्या वाकई तुम हमें तलाक दे दोगे?"[3] पढ़े-लिखे हैदर साहब अपनी पत्नी को मोरल सपोर्ट दे पाने में असमर्थ है। संजीव की कहानी 'अनम्या' एक ऐसी साधारण लड़की की कहानी है, जिसका विवाह दहेज के कारण नहीं हो पा रहा है। उसे देखने के लिए आये आगंतुकों से वह स्पष्ट रूप से कहती है, "किसी मुगालते में न रहे दहेज देने की औकात ही होती तो माँ... बिना इलाज के यूं न गुजर जाती। रिटायर्ड क्लर्क हैं। पेंशन का ज्यादातर पैसा..... खैर वह सब बताने की चीज नहीं है।"[4]निशां जानती है कि आने वाले लोग पत्र द्वारा सूचित करने का झूठा आश्वासन देकर चले जायेंगे। वर्तमान समय में निशा जैसी दहेज देने में असमर्थ परिवारों की लडकियों का शादियाँ होना आसान नहीं है। हमारे समाज में बिना दहेज शादी करने वाले लड़कों की संख्या लगभग नगण्य है।

घर चलो दलारी भाई और दुनिया की सबसे हसीन औरत आदि कहानियों के मुख्य विषय नई समस्या ही है संजीव जी इन कहानियों के माध्यम से औरतों को अन्याय अत्याचार तथा शोषण के खिलाफ आवाज उठाने लड़ने तथा अपने साहसी वृत्ति दिखाकर अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने की प्रेरणा दी है। संजीव की कहानियां पाठकों को मनोरंजन ही नहीं करती बल्कि उन्हें सोचने के लिए बंद करती हैं। यही इन कहानियों की श्रेष्ठता की निशानी है । संजीव की कहानियां यथार्थ जीवन का चित्रण ही नहीं करती अपितु दिशा निर्देश का काम भी करती है।

****

संदर्भ :

1.संजीव, कठपुतली, आप यहां है पृ- 37
2.संजीव मां, ख़ोज पृ – 160
3.संजीव, फैसला, ब्लैक होल- पृष्ठ -85
4.संजीव, अनम्या, गली के मोड पर सुना सा कोई दरवाजा पृष्ठ-57

The Panchatantra text in Ancient India: A Study

Saurabh Shubham
(Research Scholar, University of Hyderabad)

Abstract: The panchatantra stories are quite popular in the world and are studied by the people of all age groups to have a practical view of life. They give a good moral lesson and teach the right behavior at the right time. We need to analyse and study it in a detailed manner to get a complete insight.

Keywords: Panchatantra, Ancient, Moral and ethics behaviour.

Panchatantra- its structure and composition

The Panchatantra text in ancient India is a legendary work in Sanskrit literature.

It needs to be studied from various perspective and ideologies and is still relevant in the present day world. The Rise and growth of political social economic and cultural consciousness all over the world and specially in India has made in the Panchatantra text very relevant and is still taught in the school textbooks and up to the university level also. The Panchatantra text is a very practical way of moral and ethics and to behave in a real world. Panchatantra text contains of 5 chapters which are further divided into several stories and each and every story has a different moral which is of high practical nature and needs to be analysed.

The main reason for popularity of Panchatantra is the practical and to the point lessons of moral and ethics.

The Panchatantra is divided into five books, or five sections as in the popular.

The five books are-

Book 1: Mitra-bheda.
Book 2: Mitra-samprāpti.
Book 3: Kākolūkīyam.
Book 4: Labdhapraṇāśam.
Book 5: Aparīkṣitakārakaṃ

In the initial treatise, a jackal named Damanaka, unemployed in a lion-ruled kingdom, teams up with his moralizing companion Karataka. Together, they plot to disrupt alliances and friendships of the lion king. This first book consists of over thirty fables, including stories like "The Loss of Friends," "The Jackal and the War-Drum," and "The Weaver Who Loved a Princess," depicting various conspiracies and reasons leading to the dissolution of close friendships.The second treatise stands out in structure from the rest of the books, as it doesn't primarily incorporate fables. Instead, it comprises the